इन्द्रियों को संयमित रखना आवश्यकः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, दोनों दीक्षार्थियों को पढाया क्षमोपदेश का पाठ, जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का दूसरा दिन, आचार्यश्री ने हिन्दी भाषा को समझने की दी प्रेरणा

केलवाः 14 सितम्बर

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि आज के परिवेश में आत्मा की अनुभूति के लिए इंद्रियों को संयमित रखना आवश्यक है। शास्त्रों में भी उल्लेख है कि व्यक्ति को हमेशा राग–द्वेष से परे रहना चाहिए। इंद्रियां कभी खराब नहीं होती। व्यक्ति का आचरण खराब हो सकती है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि व्यक्ति आचरण और वाणी पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें और साधना व संयम के पथ पर चलने का प्रयत्न करें।

आचार्यश्री ने यह उद्‌गार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास के दौरान जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर के दूसरे दिन और सात दिन पूर्व भौतिक सुख सुविधाओं को त्याग कर संयम के मार्ग पर अग्रसर दोनों दीक्षार्थियों को क्षमोपदेश देते हुए धर्म सभा को संबोधित कर रहे थे। आचार्यश्री ने दोनों दीक्षार्थियों मुनि अतुलकुमार और साध्वी चैतन्ययशा को संयम में रहने का पाठ पढाते हुए कहा कि 7 सितम्बर को जब दोनों ने दीक्षा ली थी तब दोनों ने प्राइमरी कक्षा में प्रवेश लिया था। अब दोनों ने प्राइमरी उत्तीर्ण कर अगली कक्षा में प्रवेश ले लिया है। विगत सात दिनों में दोनों ने जैन सिद्धांत और संतों के रहन–सहन को सीखा और उसी के अनुरूप स्वयं के जीवन को व्यतीत करने का प्रयास किया। उनका यह प्रयत्न सफल हो गया है। अब अगली कक्षा में धार्मिक साहित्य और तेरापंथ के आचार्यों द्वारा लिखित व रचित साहित्यों का अध्ययन करे। उन्होंने कहा कि दोनों ने युवावस्था में दीक्षा ली है। यह यौवनावस्था होती है। मन इधर–उधर भटकता है। इसलिए स्वयं को संयम बरतने की आवश्यकता है। जितनी जरूरत है उतना बोलो। इस आयु की फिसलन हमें पतन की ओर ले जा सकती है। दृष्टि, खाद्य और सेवा को भी स्वाध्याय माना गया हैं। इस पर ध्यान देने का प्रयास करें।

आचार्यश्री ने संबोधि के चौथे अध्याय में उल्लेखित संकल्प और विकल्प के विषय पर भगवान महावीर स्वामी और उनके शिष्य मेघ के बीच चल रहे वार्तालाप पर कहा कि

व्यक्ति को इससे दूर रहने की आवश्यकता है। आध्यात्मयुक्त साधना करने से इंद्रियों का संयम पूर्ण किया जा सकता है।
शास्त्रों में पांच ज्ञानान्द्रियां बताई गई है। इनमें से दो भोगवादी है और तीन कर्मवादी हैं आदमी सुखों का भोग तो इन दो इन्द्रियों के कारण करना चाहता है, लेकिन कर्म की इन्द्रियों से दूर जाने का प्रयास करता है। हमें कर्म करने की आवश्यकता है। भोग तो क्षणिक सुख का पर्याय है। हम चक्षुओं के माध्यम से भोग कर नहीं सकते केवल देख सकते है। विषय ग्रहण के साथ राग–द्वेष जुडता है। यह असंयम का पर्याय है। हमें इससे बचने की आवश्यकता है। जब व्यक्ति के जीवन में मोहकर्म का उद्‌भव होता है तब इन्द्रियां उसके मन को विचलित करती है।

आचार्यश्री भिक्षु ज्ञानी थे

आचार्यश्री ने तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम आचार्यश्री भिक्षु को ज्ञानी के रूप में परिभाषित करते हुए कहा कि उन्होंने तेरापंथ के बहुआयामी विकास के लिए बहुत संघर्ष किया। लोगों का विरोध झेला और अनेक सारगर्भित साहित्यों को लेखन किया। वो कहते थे कि परमवाद् की भाषा में भावेन्द्रियां दर्शनावर्णी कम से अपना प्रभाव दिखाती है। जहां राग–द्वेष नहीं है, वहां प्रकृति अच्छी है और जहां इसकी बाहुल्यता है वहां अधर्म, झूठ, कपट का प्रभाव देखने को मिलता है। जो व्यक्ति संयमित जीवन में रमता है उसके लिए देवलोक के द्वार खुले रहते है और जो इससे बचने का प्रयास करता है उसे धरती पर ही नरक का बोध हो सकता है। व्यक्ति को अपने जीवन में सेवा, सहिष्णुता और संयम रखने की आवश्यकता है। उत्तराध्यन के 32 वें अध्याय और भागवत गीता में इन्द्रियां संयम का विवेचन मिलता है।

हिन्दी में भाषा ज्ञान आवश्यक

आचार्यश्री ने आज हिन्दी दिवस के अवसर पर धर्मसभा में उपस्थित श्रावक समाज और शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि हिन्दी का ज्ञान होना उतना आवश्यक नहीं है जितना भाषा का ज्ञान होना। आज भी कई लोग एकवचन और बहुवचन में अंतर नहीं समझते। होता तो विद्यार्थी और बोलते है विधार्थी। ऐसे कई उदाहरण है। अनुस्वार का उपयोग कहां किया जाना हैं। इसे समझने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि मैं अंग्रेजी भाषा का विरोध नहीं करता, लेकिन आज अंग्रेजी माध्यम में पढने वाले बच्चे से पूछ लो तो उसे हिन्दी भाषा का पर्याप्त ज्ञान नहीं है। वो वन, टू, थ्री और फोर तो बोल जाएगा और समझ जाएगा, लकिन एक, दो, तीन और चार न तो बोल पाता है और न ही उसका मतलब समझ पाता है। उन्हें अंग्रेजी का संस्कार हिन्दी से दूर करता

जा रहा है। उन्होंने आह्वान किया कि हिन्दी का लेखन और भाषा का ज्ञान कैसे मिले। इस पर चिंतन होना चाहिए। जो व्यक्ति संस्कृत भाषा में निपूर्ण है वह हिन्दी भाषा, छंद, अलंकार और अनुस्वार को अच्छी तरह समझ सकता है।

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि आज दोनों दीक्षार्थी क्षेमोपदेश चारित्र में प्रवेश कर गए है। इसमें संयम की साधना की आवश्यकता रहती है। इसे आराधना का मुख्य कारण माना गया है। सामयिक चरित्र से क्षेमापदेश के माध्यम से इन्हें संकल्पित किया गया है। भावों में चरित्र का समावेश होना बहुत बडी उपलब्धि माना गया है। श्रावक का पालन करने वाले आयुष की प्राप्ति के बाद पिछला सब कुछ भूल जाते हैं उनके सामन एक नया जीवन होता है उसी में जीवन व्यतीत करना पडता है। यह सबसे अलग हैं कषायमंद किए बगैर भावों में संयम का स्पर्श नहीं होता। संयम के साथ चेतना का रूपान्तरण होना भी आवश्यक है। संयम आने का मतलब है सातवें गुण स्थान में पहुंच जाना। यह जीवन में बहुत बडी छलांग लगती है। इस अवसर पर दीक्षार्थी मुनि अतुलकुमार, साध्वी चैतन्ययशा ने पिछले सात दिवस के दौरान अनुभूत किए गए जीवन पर विचार प्रकट किए। स्वागत उद्बोधन व्यवस्था समिति के महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी ने प्रस्तुत किया।

संगीत प्रतियोगिता 18 को

तेरापंथ युवक परिषद की ओर से रविवार को तेरापंथ समवसरण पांडाल में संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। मंत्री लक्की कोठारी ने बताया कि रात सवा आठ बजे होने वाली इस प्रतियोगिता में शिरकत करने के लिए प्रभिागी शनिवार तक अपना नाम मुनि योगेशकुमार और परिषद के अध्यक्ष और मंत्री के पास अंकित करवा सकते है।

भिक्षु को जानो प्रतियोगिता

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् की ओर से आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में भिक्षु को जानो विषयक प्रश्नमंच प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। इस प्रतियोगिता के आयोजन का मुख्य उद्देश्य तेरापंथ की उद्गम स्थली में आचार्यश्री के ऐतिहासिक चातुर्मास में ज्यादा से ज्यादा तेरापंथी युवक एवं किशोर आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व, कर्तव्य एवं दर्शन की सम्यक् व अधिक जानकारी प्राप्त कर सकें। प्रतियोगिता का मुख्य आधार आचार्य तुलसी द्वारा रचित तेरापंथ–प्रबोध, आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा रचित भिक्षु विहार दर्शन, शासन गौरव मुनि बुद्धमल द्वारा रचित तेरापंथ का इतिहास भाग– 1 एवं मुनि रजनीशकुमार द्वारा रचित रहस्य भिक्षु के साहित्य रहेगा। तीन चरणों में होने वाली

इस प्रतियोगिता के प्रथम चरण में तेरापंथ धर्मसंघ के समाचारों का मुख पत्र तेरापंथ टाइम्स में प्रकाशित 150 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के जवाब देने होंगे। प्राप्त प्रविष्ठियों में से सर्वधिक अंक प्राप्तकर्ता 200 प्रतियोगी द्वितीय चरण की लिखित परीक्षा में भाग लें सकेंगे। द्वितीय चरण की प्रतियोगिता में सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता 72 प्रतियोगी रात्रिकालीन तृतीय चरण की प्रश्नमंच में भाग ले सकेंगे। प्रश्न पत्र तेरापंथ इनफो डॉट कॉम से भी प्राप्त किया जा सकता है। प्रतियोगिता संयोजक दिनेश कोठारी ने बताया कि अंतिम चरण की प्रतियोगिता का संगीतमय संचालन संगायक कमल सेठिया करेंगे। तेरापंथ टाइम्स में प्रकाशित प्रश्नोत्तरी पहुंचने की अंतिम तिथि सितम्बर और प्रतियोगिता का अंतिम चरण 4 नवम्बर को आचार्यश्री के सान्निध्य में होगा। अधिक जानकारी संयोजक दिनेश कोठारी से प्रापत की जा सकती है।